पाठ 12 **दिसम्बर 15-21**

कलीसिया गठन और एकता

सब्त अपराह्न **दिसम्बर 15**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : इफि० 5:23-27; मत्ती 20:25-28; तीतुस 1:9; मत्ती 16:19; गला० 6:1-2; मत्ती 28:18-20.

याद वचनः *"परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने" (मत्ती 20:26,27")।*

सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्टों के तौर पर हम प्रोटेस्टेंट मसीही हैं जो विश्वास करते हैं कि उद्धार केवल विश्वास के द्वारा होता है जो यीशु मसीह ने मानवता के लिये उपलब्धि हासिल की है। हमें कलीसिया या परंपरागत कलीसिया की जरूरत नहीं है कि उस लाभ को प्राप्त करें जो मसीह ने हमारे लिये किया है। जो हम मसीह से पाते हैं सीधे उससे हम पाते हैं, क्रूस पर हमारे बदले में, और स्वर्गीय पवित्र स्थान में हमारे लिये महायाजक के रूप में बिचवाई करता है।

कलीसिया परमेश्वर की सृष्टि है, और परमेश्वर ने इसे हमारे लिये रखा, उद्धार के एक उपाय के तौर पर नहीं परन्तु एक साधन के तौर पर कि हमें संसार में उद्धार को बतलाने और प्रकट करने में मदद करें। संगठन महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह कलीसिया के काम को सक्षम और मजबूत करता है। कलीसिया संगठन के बिना यीशु के उद्धार का संवाद दूसरों तक प्रभावी ढंग से नहीं पहुँचाया जा सकता है। कलीसिया के अगुवे भी महत्त्वपूर्ण हैं वे एकता को प्रोत्साहन देते और यीशु के उदाहरण को पेश करते हैं।

इस सप्ताह हम कलीसिया संगठन के विषय अध्ययन करेंगे कि यह मिशन (विशेष कार्य) के लिये कितना विशेष है और यह किस प्रकार कलीसिया की एकता को प्रोत्साहित करता है।

रविवार **दिसम्बर 16**

मसीह, कलीसिया का सिर

जैसा कि हमने प्रथम पाठ में पहले ही देखा है, नये नियम में कलीसिया को शरीर (देह) के रूपक द्वारा पेश किया गया है। कलीसिया मसीह का शरीर है। यह रूपक कलीसिया के अनेक पहलूओं को इंगित करता है और यह भी

---

* सब्त, दिसम्बर 23 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

कि मसीह और उसके लोगों के बीच संबंध कैसा है। मसीह के शरीर के तौर पर कलीसिया अपने अस्तित्व के लिये उस पर निर्भर करती है। वह कलीसिया का सिर (कुलु० 1:18, इफि० 1:22) और जीवन का स्रोत है। उसके बिना कलीसिया का कोई आस्तित्व नहीं है।

कलीसिया अपनी पहचान मसीह से प्राप्त करती है, क्योंकि वह स्रोत और नींव है और शिक्षा एवं इसके विश्वास का मूल है। फिर भी कलीसिया इन चीजों से बढ़कर है, वैसा ही महत्त्वपूर्ण जैसा ये इसकी पहचान हैं। यह मसीह और उसका वचन है जैसा पवित्र शास्त्र में प्रकट हुआ है जो तय करता है कलीसिया क्या है। इस प्रकार कलीसिया अपनी पहचान और महत्त्व मसीह से प्राप्त करती है।

इफि० 5:23-27 में पौलुस मसीह और उसकी कलीसिया के बीच संबंध को पति और पत्नी के संबंध से समझाता है। मसीह और उसकी कलीसिया के बीच इस संबंध का मूल विचार क्या है?

_____

_____

यद्यपि हम समर्पण के विचार से दुविधा में पड़ सकते हैं क्योंकि सदियों पहले अगुवों ने इसे दुर्व्यवहार किया, फिर भी कलीसिया का सिर मसीह है और इसके अधिकार क्षेत्र में कलीसिया को रहना है। मसीह का कलीसिया के सिर के रूप में हमारी स्वीकृति हमें याद करने में मदद करती है कि आखिरकार हमारी वफ़ादारी किस पर होनी चाहिए, और वह प्रभु स्वयं है कोई दूसरा नहीं। कलीसिया का संगठन होना चाहिए, लेकिन वह संगठन हमेशा यीशु के प्रभुत्व के अधीन होना चाहिए, जो हमारी कलीसिया का सच्चा अगुवा है।

"कलीसिया इसकी नींव के तौर पर मसीह के ऊपर बनी है, मसीह को सिर के तौर पर इसे मानना। मनुष्य पर निर्भर होना नहीं है और न ही मनुष्य द्वारा नियंत्रित होना है। बहुत से लोग दावा करते हैं कि कलीसिया में भरोसे का एक पद उन्हें हुक्म जमाने का अधिकार दे देता है कि दूसरे लोग क्या विश्वास करेंगे और वे क्या करेंगे। परमेश्वर इस मांग को स्वीकृति नहीं देता है। उद्धार-कर्त्ता घोषणा करता है, "तुम सब भाई हो।" सबों की परख होती है और गलत करना स्वाभाविक है। एक सीमित मनुष्य पर हम मार्ग दर्शन के लिये निर्भर नहीं कर सकते। विश्वास की चट्टान कलीसिया में मसीह की जीवित उपस्थिति है। इस पर कमजोर निर्भर कर सकता है। और जो स्वयं को मजबूत सोचता है वह कमजोर साबित होगा, जब तक वे मसीह को अपनी दक्षता नहीं बनाते हैं।"
– Ellen G. White, The Desire of Ages, P. 414.

मसीह पर निर्भर रहना हम कैसे सीख सकते हैं, न कि किसी सीमित व्यक्ति पर जो करना बहुत सहज है?

सोमवार **दिसम्बर 17**

सेवक नेतृत्व

चेलों के साथ अपनी सेवकाई के दौरान, यीशु ने उस क्षण का बार-बार अनुभव किया जब वह संभवत: शक्ति के लिये ईर्ष्या के कारण हताशा महसूस करता है जो उनके पास दिखाई पड़ता था। प्रेरितगण यीशु के राज्य के शक्तिशाली अगुवे बनने को चिंतित लग रहे थे (मार्क 9:33,34; लूका 9:46)। चेले भी जैसे अंतिम बीयारी साथ खा रहे थे, प्रभुत्त्व और सर्वोच्चता की ये भावनाएँ उनके बीच में महसूस की जा सकती थी (लूका 22:24).

ऐसे ही एक अवसर पर, यीशु ने अपने विचारों को, अपने लोगों के बीच आत्मिक अगुवाई के बारे में, स्पष्ट रूप से प्रकट किया। मत्ती 20:25-28 में यीशु के संबोधन से नेतृत्व (अगुवाई) के कौन-से सिद्धान्तों को हम सीखते हैं? हमारे जीवन में और खास कर हमारी कलीसियाओं में इस सिद्धान्त को हम कैसे प्रकट कर सकते हैं?

_____

_____

"इस संक्षिप्त अवतरण में यीशु प्रभुत्व के दो नमूनों को हमारे सामने पेश करता है। प्रथम है प्रभुत्व का रोमी विचार। इस नमूने में कुलीन वर्ग के लोग दूसरों पर श्रेणीबद्ध तरीके से खड़े होते हैं। उनके पास निर्णय लेने के सारे अधिकार होते हैं और नीचले तबके के लोग समर्पण भावना से जीवन गुजारते हैं। यीशु ने प्रभुत्व के इस नमूने को सिरे से खारिज किया जब उसने कहा, तुम्हारे साथ ऐसा न हो।' वरन् उसने चेलों को एक लुभावना प्रभुत्व का नया नमूना पेश किया, श्रेणीबद्ध नमूने को पूरी तरह खारिज किया।"-Darins Jankiewicz, "Serving Like Jesns:Authority in God's Church,"Adventist Review, March 13, 2014, P. 18.

प्रभुत्व का विचार (अवधारणा) जिसे यीशु इस कहानी में पेश करता है, दो मूल शब्दों पर आधारित है: सेवक और दास। बाईबल के कुछ संस्करण में प्रथम शब्द "सेवक" "मत्ती" रूपांतरित हुआ है और दूसरा "दास" या "नौकर"। इस प्रकार दोनों शब्द यीशु के इरादे के प्रभाव को अधिकतर खो देते हैं। हालाँकि यीशु प्रभुत्व के सारे नमूनों को समाप्त करना नहीं चाहता था, जो वह इच्छा करता था, वह है कलीसिया के अगुवों को सबसे पहले परमेश्वर के लोगों का सेवक होना चाहिए। उनका पद प्रभुत्व के लिये नहीं, सम्मान पाने

और प्रसिद्धि के लिये नहीं है। "मसीह विभिन्न सिद्धान्तों पर एक राज्य की स्थापना कर रहा था। उसने लोगों को प्रभुत्व के लिये नहीं, वरन् सेवा के लिये बुलाया, बलवानों को कमजोरों की निर्बलताओं को सहने के लिये बुलाया। ताकत, पद, योग्यता, शिक्षा, महत्तर कर्त्तव्य के अधीन लोगों की सेवा के लिये रखे गये।"– Ellen G. White The Desire of Ages, P. 550.

पढ़ें यूहन्ना 13: 1-20. अगुवाई का कौन-सा उदाहरण यीशु ने अपने चेलों को दिया? इस अवतरण में यीशु अभी भी हमें क्या सिखलाना चाह रहा है? हम किस प्रकार चर्च के अंदर और बाहर दूसरों के साथ हमारे सभी कर्मों में सिद्धांत को उजागर कर सकते हैं ?

मंगलवार **दिसम्बर 18**

कलीसिया की एकता की रक्षा करना

पढ़ें 2तीमु० 2: 15 एवं तीतुस 1: 9. तीमुथि और तीतुस को पौलुस की सलाह अनुसार, एक विश्वस्त चर्च अगुवा और एल्डर की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी क्या है?

_____

_____

ध्यान दें, पौलुस सिद्धान्तों और शिक्षाओं की शुद्धता को बनाये रखने में कितना जोर देता है । यह एकता के लिये महत्त्वपूर्ण है, खासकर इसलिये कि कोई तर्क कर सकता है, किसी चीज से बढ़कर, हमारी शिक्षाएँ हैं जो हमारी कलीसिया को एक करती है। पुन: ऐडवेंटिस्टों के तौर पर, भिन्न-भिन्न पेशे संस्कृति, एवं पृष्ठभूमि के लोग साथ हैं। मसीह में हमारी एकता सच्चाई की हमारी समझ में पायी जाती है जिसे मसीह ने दिया है। यदि हम इन शिक्षाओं में भ्रमित हो जाते हैं तो केवल विभाजन ही आयेगा, खासकर जब हम अंत के निकट होते हैं।

"परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा, और उसके प्रगट होने और राज्य की सुधि दिलाकर मैं तुझे आदेश देता हूँ कि तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डाँट और समझा। क्योंकि ऐसा समय आयेगा जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे, पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुत से उपदेशक बटोर लेंगे, और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएँगे" (2तीमु० 4: 1-4)।

इन शब्दों के साथ, पौलुस, अपने प्रेरितीय विचारों को यीशु के दूसरे आगमन और न्याय के दिन पर केन्द्रित करता है। प्रेरित अपने ईश्वर-प्रदत्त सभी अधिकार का इस्तेमाल तीमुथि को यह महत्त्वपूर्ण सलाह देने के लिये करता है। अंतिम दिनों के संदर्भ में झूठी शिक्षाओं की बढ़ती और बढ़ती अनैतिकता के साथ तीमुथि को परमेश्वर का वचन प्रचार करना है। यही सेवकाई है जिसके लिये वह बुलाया गया है।

उसकी शिक्षा की सेवा के भाग के तौर पर, तीमुथि को विश्वास दिलाना, डांटना, और समझाना है। ये क्रियाएँ पवित्र शास्त्र द्वारा दी गई अगुवाई की याद दिलाती हैं (2तीमु० 3:16)। स्पष्ट रूप से, तीमुथि का काम अनुसरण करना, सिखाना, और लागू करना है जो वह पवित्र शास्त्र में पाता है और इसे क्लेश और धैर्य के साथ करता है। कठोर और गंभीर डांट मुश्किल से एक पापी को मसीह तक लाता है। पौलुस ने जो लिखा उसका अनुसरण करने के द्वारा, और इसे पवित्र-आत्मा के निर्देश में अनुसरण करने के द्वारा और सेवक-अगुवा प्रवृति के साथ तीमुथि कलीसिया में सशक्त बदलाव लाने की शक्ति बन सकता था।

कौन-से व्यावहारिक तरीके हैं जिनके द्वारा आप हमारे कलीसिया के अगुवों को कलीसिया में एकता कायम रखने में मदद कर सकते हैं? हम कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम हमेशा विवादों के बावजूद अनेकता के विपरीत एकता की शक्ति बन सकते हैं?

बुधवार **दिसम्बर 19**

कलीसिया में अनुशासन

कलीसिया संगठन के खास मुद्दों में से एक है अनुशासन। कलीसिया की एकता को सुरक्षित रखने में अनुशासन किस प्रकार मदद करता है? यह कभी-कभी अपमान का विषय होता और सहज ही गलत मान लिया जाता है। परन्तु बाईबलीय परिपेक्ष्य में कलीसिया का अनुशासन दो महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में केन्द्रित होता है: सिद्धांत की शुद्धता का संरक्षण और कलीसियाई जीवन और अभ्यास की शुद्धता का संरक्षण।

जैसा हमने पहले ही देखा है, नया नियम, विशेष कर अंतिम समय में, झूठी शिक्षा और स्वधर्म त्याग के पनपने में, बाईबलीय शिक्षा की शुद्धता को संरक्षित करने की महत्ता को कायम रखता है। वैसा ही अनैतिकता बेईमानी, भ्रष्टता के खिाफ सतर्कता के द्वारा समुदाय की जिम्मेदारी संरक्षित की जाती है। इस निमित पवित्र शास्त्र में लिखा है

"उपदेश और समझाने और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है" (2तीमु० 3: 16).

पढ़ें मत्ती 16: 19 एवं 18: 15-20. जो गलत हैं उनके लिये अनुशासन और चेतापन के विषय में यीशु ने कलीसिया को कौन-से सिद्धान्त दिये?

बाईबल हमारे आत्मिक और नैतिक जीवन में एक दूसरे के प्रति हमारी जिम्मेदारी और अनुशासन की अवधारणा का समर्थन करती है। वास्तव में, कलीसिया के विशिष्ट चिह्नों में से एक इसकी पवित्रता, या संसार से इसका अलगाव है। हम बाईबल में निश्चित रूप से कठिन परिस्थितियों के बहुत से उदाहरण पाते हैं जो कलीसिया से माँग करती है कि अनैतिक व्यवहारों के खिलाफ दृढ़तापूर्वक काम करे। कलीसिया में नैतिक स्तर कायम किए जाने चाहिए।

कलीसिया में कठिन मुद्दों को संबोधित करते हुए ये अवतरण हमें कौन से सिद्धान्तों को पीछा करना सिखलाता है? मत्ती 7: 1-5; गला० 6: 1,2.

कलीसिया में अनुशासन की जरूरत के विषय में हम बाईबलीय शिक्षा का इंकार नहीं कर सकते हैं। इसके बिना हम संसार के प्रति विश्वस्त नहीं रह सकते हैं। परन्तु बहुत-सी इन चेतावनियों में छुटकारे के गुणों को देख सकते हैं। जितना संभव हो अनुशासन को छुटकारा देने वाला होना चाहिए। हमें याद करने की जरूरत है कि हम सब पापी हैं और हम सभी को अनुग्रह की जरूरत है। इस प्रकार जब हम अनुशासन का प्रबंध करते हैं, हमें इसे नम्रता पूर्वक और हमारी स्वयं की असफलताओं के प्रति जागरूकता के साथ करते हैं।

गलत करने वाले के साथ हमारे व्यवहार में दण्ड की वजाय छुटकारा अधिक की प्रवृति से कार्य करना हम कैसे सीख सकते हैं ?

बृहस्पतिवार **दिसम्बर 20**

मिशन (विशेष कार्य) के लिये आयोजन

जिस प्रकार हमने पूरे इस त्रिमास में देखा है, कलीसिया के तौर पर हम मिशन के लिये और आगे बढ़ने के लिये संगठित और जुड़े हुए हैं। हम ऐसे ही कोई सामाजिक संघ (Social Club) नहीं हैं जो समान सोच वाले लोगों के लिये एक साथ जमा होना और एक दूसरे का समर्थन करना है जिसमें हम विश्वास करते हैं। हम संसार में उस

सच्चाई को साझा करने हेतु बुलाये गये हैं जिसे हम स्वयं प्रेम करने के लिये आये हैं।

मत्ती 28: 18-20 में, यीशु ने अपने चेलों को संसार में उनके काम के लिये अंतिम निर्देश दिया। यीशु की आज्ञा के मूल शब्दों को चिह्नित करें। ये शब्द कलीसिया के लिये आज क्या संकेत करते हैं ?

यीशु की महान आज्ञा अपने चेलों के लिये चार मूल क्रियाओं को शामिल करती है: जाना, चेला बनाना, बपतिस्मा देना, और सिखना। इन पदस्थलों के यूनानी व्याकरण अनुसार, मुख्य क्रिया चेला बनाना है, और तीन अन्य क्रियाएँ संकेत करती है कि यह कैसे होता है। चेले तब बनते हैं जब विश्वासी सारे राष्ट्र में जाकर सुसमाचार प्रचार करते, लोगों को बपतिस्मा देते और यीशु के कहे अनुसार उन्हें चलना सिखाते हैं।

जिस प्रकार कलीसिया इस आदेश का प्रत्युत्तर देती है, परमेश्वर के राज्य की बढ़ोत्तरी होती है, और सारे राष्ट्र के अधिक से अधिक लोग उस पंक्ति में शामिल होंगे जो यीशु को उद्धारकर्त्ता के तौर पर ग्रहण करते हैं। बपतिस्मा के लिये यीशु की आज्ञा के प्रति उनकी आज्ञा पालन और उनकी शिक्षाओं को पालन करना एक नये विश्व परिवार का निर्माण करता है। नये चेले प्रतिदिन यीशु की उपस्थिति का आश्वासन पाते हैं और वे भी अधिक चेले बनाते हैं। यीशु की उपस्थिति परमेश्वर की उपस्थिति की एक प्रतिज्ञा है। मत्ती का सुसमाचार इस ऐलान के साथ शुरू होता है कि यीशु का जन्म "परमेश्वर हमारे साथ" (मत्ती 1: 23) के विषय में है और उसके दूसरे आगमन तक यीशु की हमारे साथ निरंतर उपस्थिति की प्रतिज्ञा के साथ अंत होता है।

"मसीह ने अपने चेलों को नहीं बताया कि उनका काम सहज होगा ... उसने उन्हें आश्वस्त किया कि वह उनके साथ रहेगा; और यदि वे विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे, वे सर्वशक्तिमान की ढाल में चलेंगे। उसने उन्हें साहसी और मजबूत होने का आशीर्वाद दिया; उनके साथ शक्तिशाली स्वर्ग दूतों से भी बढ़कर स्वर्ग की सेना का सेनापति होगा। उसने उनके काम के कार्यान्वयन की पूरी व्यवस्था की और इसकी सफलता की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। जब तक उन्होंने उसके वचन को माना और उसकी सहभागिता में काम किया, वे असफल नहीं हुए।"– Ellen G. White, The Acts of the Apostles P. 29.

उसके दूसरे आगमन तक उनके साथ यीशु की उपस्थिति की प्रतिज्ञा के अर्थ पर चिंतन करें। इस प्रतिज्ञा की वास्तविकता हमें किस प्रकार प्रभावित करनी चाहिए जिस प्रकार हम यीशु द्वारा दिये गये काम को पूरा करना चाहते हैं?

शुक्रवार **दिसम्बर 21**

अतिरिक्त विचार: Ellen G . White, "Individual Responsibility and Christian Unity," PP. 485-505, in Testimonies to Minister and Gospel Workers; "Unity in Diversity, PP. 483-485, and "Church Discipline, PP. 498-503, in Gospel Workers. Read the articles "Church," PP. 707-710' and "Church Organisation," PP. 712-714, in the Ellen G. White Encyclopedia.

"अच्छे नेतृत्व के सिद्धांत कलीसिया को मिला कर हर प्रकार के समाज की मांग है। तथापि, कलीसिया का अगुवा, अगुवा से भी बढ़कर होता है। उसे सेवक भी होना चाहिए।

"अगुवा होने और सेवक होने के बीच स्पष्ट अंतर्विरोध है। एक ही साथ कौन अगुवाई और सेवा कर सकता है। क्या अगुवा का पद सम्मान का पद नहीं होता है? क्या वह आदेश नहीं दे सकता और दूसरों से उसे मानने की अपेक्षा नहीं कर सकता है? तब कैसे एक सेवक होकर नीच पद ग्रहण करता है, आदेश प्राप्त करना और उन्हें पूरा करना ?

"विरोधाभास का समाधान करने के लिये हमें यीशु को देखना चाहिये। उसने सर्वोच्चतापूर्वक नेतृत्व के सिद्धान्त को पेश किया जो सेवा करता है। उसका संपूर्ण जीवन एक सेवा था। साथ ही-साथ वह महानतम अगुवा था जैसा संसार ने अभी तक देखा है"- G . Arthur Keough, Our Church Today: What It Is and Can Be, P. 106.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न:

1. सेवक-अगुवा के विचार पर चिंतन करें धर्मनिरपेक्ष संसार में, यदि ऐसे उदाहरण हों तो, क्या हम पा सकते हैं ?
2. पुन: पढ़ें मत्ती 20: 25-28. इस विषय में यह हमें क्या बतलाता है किस प्रकार परमेश्वर महान (मत्ती 20: 26) शब्द के अर्थ को संसार के समझने से उलट समझता है?

3. यदि कलीसिया के अगुवाओं के कामों में से एक एकता को संरक्षित करना है, तो कलीसिया के अगुवे लड़खड़ाने पर हमें क्या करना चाहिए, जब उनकी मानवता खूबसूरत उदाहरण बनने से उन्हें रोकती है?

4. यह क्यों इतना महत्त्वपूर्ण है कि हम कलीसिया के अनुशासन का प्रबंध अनुग्रह के आत्मा और गलत करने वाले की ओर प्रेम के साथ करें? इस प्रक्रिया में मत्ती 7:12 हमेशा हमारे मन-मस्तिष्क में क्यों सर्वोपरि होना चाहिए?

साराँश:- बेहत्तर कलीसिया संगठन कलीसिया के कार्य और विश्वासियों की एकता के लिये आवश्यक है। मसीह कलीसिया का सिर है, और कलीसिया को अगुवाओं को उसके उदाहरण का अनुसरण करना है, क्योंकि वे परमेश्वर के लोगों को अगुवाई करते हैं। एकता को वचन के प्रति विश्वस्त जीवन के द्वारा और परमेश्वर के वचन के विश्वास योग्य शिक्षा के द्वारा संरक्षित किया जा सकता है।